PATNA WOMEN'S COLLEGE 1940

Philosophy
Explore–Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

ईश्वरविहीन धर्मों में ईश्वर की अवधारणा

• कुमारी अभिलाषा • अन्नु कुमारी • राधा कुमारी
• कुमकुम रानी

Received : November 2012
Accepted : March 2013
Corresponding Author : Kumkum Rani

Abstract : २१वीं सदी विज्ञान और तकनीकी का युग है परन्तु आज भी धर्म और दर्शन को नकारा नहीं जा सकता। एक असीम सत्ता में विश्वास किए बिना भी नैतिक मूल्यों का पालन संभव है। इस शोध कार्य का उद्देश्य है कि लोग रूढ़िवादिता का त्याग कर नैतिक मूल्यों को महत्व दें। इस शोध कार्य में हमने वर्णनात्मक विधि विश्लेषणात्मक विधि तथा संश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया है। धर्म एक जटिल मनोवैज्ञानिक पद्धति है जिसके तीन पहलू हैं- ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक। अधिकांश धर्म ईश्वर की अवधारणा को स्वीकार करते है, परन्तु कुछ ऐसे भी धर्म है जहाँ ईश्वर को अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया है। जैसे- बौद्ध धर्म, जैन धर्म एवं मानवीय धर्म। भले ही इनके ईश्वर की अवधारणा ईश्वरवादी अवधारणा से भिन्न है। इन धर्मों ने पराशक्ति की अवधारणा को निर्वाण, बोद्धिसत्व, अर्हत आदि विभिन्न नामों से निर्दिष्ट किया है। इन धर्मों में नैतिक मूल्यों की श्रेष्ठता है। अतः इस शोध कार्य का निष्कर्ष है कि हम इस समाज में आदर्श मूल्यों की प्रतिस्थापना कर धार्मिक हिंसा को रोक सकते है।

Keywords: रूढ़िवादिता, ज्ञानात्मक, भावात्मक, क्रियात्मक, पराशक्ति निर्वाण, बोद्धिसत्व, अर्हत्त, पंचरामेष्टि।

कुमारी अभिलाषा
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

अन्नु कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

राधा कुमारी
बी० ए०–तृतीय वर्ष (2010–2013), दर्शनशास्त्र (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

कुमकुम रानी
व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : drkumkumranipatna@gmail.com

विषय परिचयः-

धर्म और दर्शन एक ही वस्तु के दो पहलू है। धर्म का उद्‌भव श्रद्धायुक्त भय और आश्चर्य से हुआ है, जबकि दर्शन की उत्पत्ति भी आश्चर्य से मानी गयी है।

प्रो० गैलवे के अनुसार ''धर्म वह है जिसमें अपने से परे किसी शक्ति के प्रति मानव श्रम के द्वारा अपनी संवेदनात्मक आवश्यकताओं की पूर्ति करके जीवन में स्थिरता प्राप्त करता है और जिस स्थिरता को वह उपासना और सेवा में अभिव्यक्त करता है।''

ऐतिहासिक सिंहावलोकन में ऐसे धर्म भी पाये गये हैं जिसमें ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया है यह धर्म अनीश्वरवादी धर्म कहलाते हैं।